(E - 121) आज हृदय पुलकित हो (स्वागत-गान)

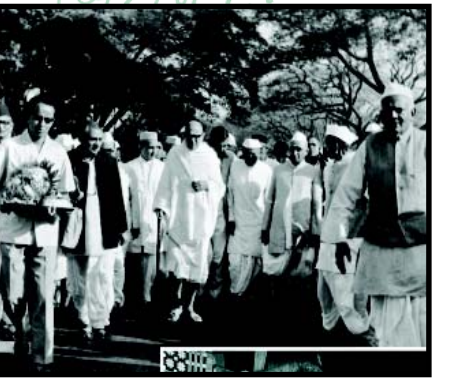

आज हृदय पुलकित हो गाता, तेरा स्वागत गान रे।
अभिनंदन है आज पूज्यवर, स्वामी कहान महान रे।।

स्वानुभूति के उपवन में तब, मानस हंस विचरता है।
सदा निराकुल सागर के, सुख सागर में तिरता है।।
मिलि विरोधी चट्टाने पर, परिणामों में थिरता है।
तव वाणी के शब्द शब्द में आत्म ज्ञान बिखरता है।।
रोम रोम में व्याप रहा जिनवाणी का श्रद्धान रे।
अभिनंदन है आज गुरुवर स्वामी कहान महान रे।।

तेरी वाणी शिवसुख दानी, महावीर की वाणी है।
प्राणी मात्र की हित चिंतक है, जग जग मन कल्याणी है।।
सहजानंदमें विचरण करता, आत्म कला पहचानी है।
वंदन हो श्रद्धेय गुरु तू, समयसार का ज्ञानी है।।
हो जाएगा कुछ भव में तू, भूतल का भगवान् रे।
अभिनंदन है आज गुरुवर स्वामी कहान महान रे।।

तुम को पाकर आज हुआ, सौराष्ट्र-राष्ट्र गौरवशाली।
फैल रही है नगर नगर में, डगर जगर में उजियाली।।
धन्य तुम्हारी मात उजमबा, ये निधि जग को दे डाली।
कौन तपस्या कर कब करदी थी, कंचन काया काली।।
हर दम सम्यगदर्श गली में, खोज रहा निर्वाण रे।
अभिनंदन है आज गुरुवर स्वामी कहान महान रे।।

उपकारी उपकार तुम्हारा, नहीं भुलाया जाएगा।
इतिहासों के खुले पृष्ठ पर, लिखा स्वर्णसे जाएगा।।
कितने भले विरोधी आएं, चरणों में गिर जाएगा।
जिसको बल सच्चाई का है, दीप न बुझने पाएगा।।
जैन जगत को बनकर आया अजर-अमर वरदान रे।
अभिनंदन है आज गुरुवर, स्वामी कहान महान रे।।

तव उपदेशों में चेतन की, दिव्य चेतना पाते हैं।
तेरी अमृत वाणी क्या है, समकित की बरसाते हैं।।
स्वर्णपुरी की आत्म पिपासु, जब जब महिमा गाते हैं।
कहते हैं उस मिट्टी तक में आत्म तत्त्व की बातें है।।
बिखर रहा रज के कण-कण तक में भी निर्मल ज्ञान रे।
अभिनंदन है आज गुरुवर स्वामी कहान महान रे।।